माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन की स्थिति

डॉ. अमिता जैन, शोध निर्देशिका एवं
आरती सैनी, शोधार्थी
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, नागौर

- **सारांश**

शोधार्थी द्वारा ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन का एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया है। इस शोध अध्ययन के आधार पर शोधार्थी ने यह जानना आवश्यक समझा कि वर्तमान में विद्यालयों में विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन के ज्ञान का स्तर क्या है। इसमें सर्वेक्षणात्मक अध्ययन करके शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समांतर कोश संबंधी अवबोधन स्तर आंकलन किया है। शोधार्थी द्वारा किए गए शोध कार्य में गहन परिश्रम की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब समाज में सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को समांतर कोश अवबोधन के स्तर को बढ़ाने का लाभ प्राप्त होगा व साथ ही शिक्षण विधियों के विकास से विद्यार्थियों का समांतर कोश अवबोधन के संबंध में ज्ञानवर्धन भी होगा। आज भाषा विकास में समांतर कोश का अवबोधन महत्वपूर्ण है। इसके स्तर में सुधार करने के लिए आवश्यकता है जागरूकता की, यह जागरूकता शिक्षकों और विद्यार्थियों में होनी अनिवार्य है।

मुख्य शब्द – माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, समांतर कोश, अवबोधन, पर्यायवाची शब्द, समानार्थी शब्द

- **प्रस्तावना**

जैसा कि हम जानते है किसी भी भाषा को सरल व सुबोध बनाने में शब्दकोश की आवश्यकता होती है। शब्दकोश भाषा की योजना को क्रियान्वित करने का एक ऐसा प्रयास है जो शब्दों को सुस्पष्ट करने एवं समझने में मदद कर सकता है। समांतर कोश में नूतन शब्दों को समाहित किया गया है। इसमें समांतर कोश को अत्यंत सहज एवं सरल बनाने का प्रयास किया गया है। इसको सहज व सरल बनाने के लिए ग्रंथों व प्राचीन पुस्तकों की सहायता ली गयी है जो समांतर कोश की प्रमाणिकता को बढ़ाती है। शब्दों का सटीक एवं विस्तृत विवेचन के लिए समांतर कोश की सहायता ली जाती है। भाषा की शुद्धता तथा अर्थ स्पष्टता के लिए समांतर कोश में अधिक से अधिक ध्यान रखा गया है। वर्तमान समय में समांतर कोश लिखने के लिए जिन्होंने प्रयास किया है वह किसी न किसी समय परेशान एवं हताश हुए है। इस स्थिति के अनेक कारण हो सकते है। इन सभी में एक कारण समान रूप से पाया जाता है कि लेखक लिखने से पहले अपने विचारों को सुव्यवस्थित नहीं कर पाता है लेखक लिखने का प्रयोजन तो जानता है किन्तु यह नहीं जानता है कि अपनी बात को कैसे अभिव्यक्त करे? ऐसा इसलिए होता है कि उन्हें स्पष्ट रूप से यह ज्ञात नहीं होता कि वे कहना क्या चाहते है। वे अपने विचारों की भाषा में ढ़ालने से पूर्व न तो उनकी गहराई में जाकर उनका वर्गीकरण करते है और न उन्हें क्रमबद्ध करते है। आज विश्वभर में फैला हिन्दी समाज और संसार में दूसरे नम्बर की भाषा हिन्दी तेजी से बदल व बढ़ रही है। नित–नई तकनीकों के प्रादुर्भाव नयी शब्दावली आ रही है। नयी वैश्विक (विश्व की संस्कृति) सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भ हम से जुड़ रहे है। भारत में रहने वाले हिन्दी साहित्यकारों और समाचार–पत्रों का ध्यान नए विषयों की और जा रहा है तो विदेशों में बसे भारतवंशी नए अनुभव ओर विचार लिख रहे है। बदलते और आगे बढ़ते हिन्दी वालो को चाहिए कि एक भारत केन्द्रित अन्तर्राष्ट्रीय थिसारस जो यह आत्मसात् कर सके। वर्तमान युग में कोश विधा को अत्यन्त व्यापक परिवेश में विकसित किया गया। शब्दकोश के स्वरूप का बहुमुखी प्रवाह निरन्तर

प्रौढ़ता की ओर बढ़ता लक्षित हो रहा है। शब्दकोश में शब्दों के सही उच्चारण का संकेत चिन्हों से विशुद्ध ओर परिनिष्ठत बोध भी कराया है। शब्दकोशों के अनेक रूप आज विकसित हो चुके है। वैज्ञानिक और शास्त्रीय विषयों के सामूहिक और विषय के अनुसार शब्दकोश आज सभी समृद्ध भाषाओं में बनते जा रहे है। शब्दकोश की रचना एक भाषा में भी होती है और अनेक भाषाओं में भी होती है। समस्त आधुनिक विधाओं के कोश विश्व की विविध सम्पन्न भाषाओं में विशेषज्ञों की सहायता से बनाए जा रहे है।

- **शब्दकोश** – शब्दकोश में नवीनतम स्वीकृत हिन्दी भाषा के शब्दों को समाहित किया गया है। शब्दों से बनने वाले समानार्थी शब्दों को भी यथास्थान स्पष्ट किया गया है। जिससे भाषा और शब्द ज्ञान के संप्रेषण में रूकावट नहीं आये। शब्द–भण्डार को बढ़ाना भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। नए विषयों के अध्ययन से नए–नए अनुभव प्राप्त करते है वैसे–वैसे उनका शब्द–भण्डार बढ़ता चला जाता है। जैसे – एकार्थी, अनेकार्थी, समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते है।

अर्थ के आधार पर – 1. सार्थक शब्द 2. निरर्थक शब्द

सार्थक शब्द–जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ होता है जैसे–खाना,पीना आदि।

निरर्थक शब्द–जिस शब्द का कोई उद्देश्य तथा अर्थ न निकले, जैसे–पानी के साथ वानी, चाय के साथ वाय निरर्थक शब्द है।

भारत में कोश विधा के आधुनिक स्वरूप का उद्‌भव और विकास हिन्दी कोशों की मान्यता और रचना प्रक्रिया से भिन्न उद्देश्यों को लेकर हुआ है।

- समांतर कोश की एक दूसरी नयी धारा ज्ञान कोशात्मक है जो विश्वकोश के नाम से जाना जाता है।
- आधुनिक समांतर कोशों में शब्द प्रयोग के क्रमिक ज्ञान के लिए एतिहासिक अध्ययन होता है।
- समांतर कोश की नूतन रचना प्रक्रिया आज के युग में भाषा विलान के अनेक अंगों से बहुत प्रभावित हो गयी है।

तथ्यों की निश्चितता एवं विचारों की स्पष्टता के अभाव में संबद्ध परीक्षार्थी भी, ज्ञान का भण्डार मस्तिष्क में संजोए रखने के बावजूद भी उतने अंक प्राप्त नहीं कर पाते है जितने कि वे अधिकारी होते है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भाषा की उपयोगिता के लिए विचारों की स्पष्टता आवश्यक है। समांतर कोश में शब्दों का संकलन किया जाता है। जीवन के क्रियाकलाप के लिए भावनाएँ, विचार एवं मान्यताओं का वर्गीकरण किया जाता है, फिर उन शब्दों को इस तरह रखा जाता है कि हर भाव का एक शब्द समूह बन जाए।

- **समस्या कथन–** ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन का एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन।''
- **अध्ययन के उद्देश्य**

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन सम्बन्धी समस्या का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व गैर सरकारी ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन संबंधी समस्या का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी शहरी व गैर सरकारी शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के प्रति अवबोधन संबंधी समस्या का अध्ययन करना।

- **शोध की परिकल्पनाएँ–** शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो निम्नानुसार है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के अवबोधन सम्बंधी समस्या में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व गैर सरकारी ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के अवबोधन सम्बन्धी समस्या में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी शहरी व गैर सरकारी शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के अवबोधन सम्बन्धी समस्या में सार्थक अन्तर नहीं है।

- **शोध विधि –** शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श –** न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- **शोध के चर**

स्वतंत्र चर – समांतर कोश का अवबोधन

आश्रित चर – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

- **उपकरण –** स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।
- **शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी**

मध्यमान (डमंद)

प्रमाणिक विचलन ैण्क)

क्रान्तिक अनुपात (ब्ण्त)

- **परिणाम एवं व्याख्या**

परिकल्पना संख्या 1. – माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के अवबोधन संबंधी समस्या में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी – 4.1

समूह (ळतवनच)	संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन ैण्क)	क्रांतिक अनुपात (ब्तपजपंस त्ंजपव)	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी विद्यार्थी	150	45.18	12.83	1.20	.05 स्तर – 1.66 .01 स्तर – 2.36	स्वीकृत स्वीकृत
गैर सरकारी विद्यार्थी	150	46.81	10.48		सार्थक अंतर नहीं है।	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों के समांतर कोश अवबोधन संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 45.18 तथा 46.81 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 12.83 तथा 10.48 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.20 प्राप्त हुआ। डीएफ 298 स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता मान 1.66 एवं .01 स्तर पर सार्थकता मान 2.36 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना संख्या 2. – माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व गैर सरकारी ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के अवबोधन संबंधी समस्या में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 4.2

समूह (ळतवनच)	संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (ैण्क)	क्रांतिक अनुपात (ब्तपजपंस त्ंजपव)	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी ग्रामीण विद्यार्थी	75	45.13	12.98	0.96	.05 स्तर – 1.66 .01 स्तर – 2.36	स्वीकृत स्वीकृत
गैर सरकारी ग्रामीण विद्यार्थी	75	46.52	10.47		सार्थक अंतर नहीं है।	

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के गैर सरकारी व सरकारी विद्यार्थियों के तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान 45.13 व 46.52 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन 12.98 और 10.47 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 0.96 प्राप्त हुआ। 148 डीएफ स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता का मान 1.66 और .01 स्तर पर सार्थकता का मान 2.36 है। यह मान सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व गैर सरकारी ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों के समांतर कोश अवबोधन संबंधी समस्या में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना संख्या 3. – माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समांतर कोश के अवबोधन संबंधी समस्या में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 4.3

समूह (ळतवनच)	संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (ैण्क)	क्रांतिक अनुपात (ब्तपजपंस त्ंजपव)	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी शहरी विद्यार्थी	75	45.22	12.76	0.98	.05 स्तर – 1.66 .01 स्तर – 2.36	स्वीकृत स्वीकृत
गैर सरकारी शहरी विद्यार्थी	75	47.10	10.55		सार्थक अंतर नहीं है।	

उपर्युक्त तालिका द्वारा ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के गैर सरकारी व सरकारी विद्यार्थियों के तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान 45.22 व 47.10 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन 12.76 और 10.55 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 0.98 प्राप्त हुआ। 148 डीएफ स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता का मान 1.66 और .01 स्तर पर सार्थकता का मान 2.36 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व सरकारी शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समांतर कोश अवबोधन संबंधी समस्या में सार्थक अंतर नहीं है।

- **शोध निष्कर्ष**

शोध कार्य में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए गए है –

1. माध्यमिक स्तर के विभिन्न विद्यालयों में समांतर कोश अवबोधन संबंधी समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का समांतर कोश संबंधी अवबोधन उच्च स्तर का प्राप्त हुआ है। इसमें विद्यालय के सरकारी या गैर सरकारी होने के विषय में समांतर कोश संबंधी अवबोधन में कोई अंतर नहीं प्राप्त हुआ है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में समांतर कोश अवबोधन संबंधी समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी चाहे वह ग्रामीण या शहरी क्षेत्र के हो उनमें भी कोई सार्थक अंतर नहीं है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों का समांतर कोश अवबोधन उच्च स्तर का प्राप्त हुआ है।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं में समांतर कोश अवबोधन संबंधी समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी और गैर सरकारी तथा शहरी क्षेत्र के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में समांतर कोश संबंधी अवबोधन उच्च स्तर का प्राप्त हुआ है।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची**

(1) बी.ए., श्यामसुन्दरदास, शुक्ल रामचन्द्र एवं भट्ट बालकृष्ण (1673), ''हिन्दी शब्द सागर'', नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।
(2) युवाचार्य महाप्रज्ञ, तुलसी आचार्य (2003), ''एकार्थक कोश'', जैन विश्व भारती लाडनूं, राजस्थान।
(3) वर्णेकर, श्रीधर भास्कर (1998), ''संस्कृत वाड्मय कोश'', भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता।
(4) बाहरी, हरदेव (1998), ''उच्चतर हिन्दी–अंग्रेजी कोश'', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

(5) वर्मा, रामचन्द्र (1887), ''मानक हिन्दी कोश'', हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
(6) शास्त्री, ज्ञानप्रकाश (2005), ''पाणिनि–प्रत्ययार्थ–कोष;'' परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
(7) जैन, उदयचन्द्र (2005), ''प्राकृत हिन्दी शब्दकोश'', न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, जवाहर नगर, दिल्ली।
(8) चन्द्र, आर.के. (1987), ''प्राकृत –हिन्दीकोश'', प्राकृत जैन विद्या विकास फण्ड, अहमदाबाद।
(9) युवाचार्य, महाप्रज्ञ (2005), ''देशी शब्दकोश'', जैन विश्व भारती लाडनूं, नागौर।
(10) भाटिया, कैलाशचन्द्र (1999) ''हिन्दी–अंग्रेजी अभिव्यक्ति कोश'', प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली।
(11) उतकर, नामदेव (1999), ''व्यावहारिक हिन्दी'', चन्द्रलोक, किंदवई नागर, कानपुर।
(12) वर्मा, रामचन्द्र (1887), ''मानक हिन्दी कोश'', हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
(13) वाजपेय, एस.आर. (1976), ''अण्डरस्टेण्डिंग ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च'', मेग्राहिल कम्पनी, न्यूयार्क।
(14) युवाचार्य, महाप्रज्ञ (2005), ''देशी शब्दकोश'', जैन विश्व भारती लाडनूं, नागौर।
(15) उपाध्याय, भगवतशरण (1999), ''भारतीय व्यक्ति कोश'', आर्य बुक डिपो, करोला बाग, नई दिल्ली।